

अब अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार  
को स्मरण रख, जब तक कि बुरे दिन न आएँ,  
वा वर्ष निकट न आएँ, कि तू कहेगा, मुझे इन से  
कुछ सुख नहीं;

सभोपदेशक 12:1



...क्योंकि मनुष्य के मन की कल्पना बचपन से ही बुरी होती है...उत्पत्ति 8:21

यदि वे उसकी आज्ञा मानें और उसकी सेवा करें, तो वे अपने दिन समृद्धि में और अपने वर्ष सुख में व्यतीत करेंगे। परन्तु यदि वे न मानें, तो तलवार से नाश किए जाएं, और बिना ज्ञान के मर जाएं। परन्तु कपटी लोग मन ही मन क्रोध भड़काते हैं; जब वह उन्हें बान्धता है, तब चिल्लाते नहीं। वे जवानी में ही मर जाते हैं, और उनका जीवन अशुद्ध लोगों के बीच में रहता है। अय्यूब 36:11-14

क्योंकि हे परमेश्वर यहोवा, तू ही मेरी आशा है; तू ही मेरी जवानी से मेरा भरोसा है। तेरे ही द्वारा मैं गर्भ से उठा लिया गया; तू ही है, जिसने मुझे मेरी माता के पेट से निकाला; मेरी स्तुति निरन्तर तेरे कारण होती रहेगी। भजन 71:5-6

मैं प्रभु यहोवा की शक्ति से चलूंगा; मैं तेरे धर्म का, वरन केवल तेरे ही धर्म का वर्णन करूंगा। हे परमेश्वर, तू ने मुझे बचपन से सिखाया है; और अब तक मैं तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करता आया हूं। हे परमेश्वर, अब जब मैं बूढ़ा और पक गया हूं, तब भी मुझे न त्यागना; जब तक मैं इस पीढ़ी के लोगों को तेरी शक्ति, और आनेवाले हर एक को तेरी शक्ति प्रगट न कर दूं। भजन 71:16-18

जवान अपना मार्ग किस प्रकार शुद्ध करे? अपने वचन के अनुसार उस पर ध्यान देकर। भजन 119:9

हे जवान, अपनी जवानी में आनन्द मना; और अपनी जवानी के दिनों में अपने मन को आनन्दित करते रहो, और अपने मन के मार्ग पर और अपनी आंखों के साम्हने चलते रहो; परन्तु यह जान रखो, कि इन सब बातोंके कारण परमेश्वर तुझे दण्ड देगा। इसलिये अपने हृदय से दुःख दूर करो, और अपने शरीर से बुराई दूर करो; क्योंकि बचपन और जवानी व्यर्थ हैं। सभोपदेशक 11:9-10



क्या आप नहीं जानते? क्या तू ने नहीं सुना, कि सनातन परमेश्वर यहोवा, जो पृथ्वी की छोर का सृजनहार है, थकता नहीं और थकता नहीं? उसकी समझ की कोई खोज नहीं है. वह मूर्छितों को शक्ति देता है; और वह निर्बलोंको बल बढ़ाता है। जवान तो थक जाएंगे और थक जाएंगे, और जवान पूरी तरह गिर पड़ेंगे; परन्तु जो यहोवा की बात जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे; वे उकाबों की नाई पंख फैलाकर उड़ेंगे; वे दौड़ेंगे, और थकेंगे नहीं; और वे चलेंगे, और थकेंगे नहीं। यशायाह 40:28-31

तब छोटे लड़के उसके पास लाए गए, कि वह उन पर हाथ रखे, और प्रार्थना करे: और चेलों ने उन्हें डांटा। परन्तु यीशु ने कहा, बालकोंको दुःख दो, और उन्हें मेरे पास आने से न रोको; क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। और उस ने उन पर हाथ रखा, और वहां से चला गया। और देखो, एक ने आकर उस से कहा, हे अच्छे गुरु, मैं कौन सा अच्छा काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं? और उस ने उस से कहा, तू मुझे भला क्यों कहता है? एक ही अर्थात् परमेश्वर को छोड़ और कोई अच्छा नहीं है: परन्तु यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं का पालन कर। उस ने उस से कहा, कौन सा? यीशु ने कहा, तू हत्या न करना, तू व्यभिचार न करना, तू चोरी न करना, तू झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। उस जवान ने उस से कहा, ये सब वस्तुएं मैं ने लड़कपन से लेकर आज तक संभाल रखी है; अब मुझ में किस बात की घटी हुई? यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहे, तो जाकर जो कुछ तेरे पास है उसे बेचकर कंगालों को बांट दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले। परन्तु जब जवान ने यह बात सुनी, तो वह उदास होकर चला गया: क्योंकि उसके पास बड़ी सम्पत्ति थी। मत्ती 19:13-22



हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो: क्योंकि यही उचित है। अपने पिता और माता का आदर करो; (जो प्रतिज्ञा सहित पहिली आज्ञा है;) कि तेरा भला हो, और तू पृथ्वी पर बहुत दिन तक जीवित रहे। इफिसियों 6:1-3

कोई तेरी जवानी का तिरस्कार न करे; परन्तु तू वचन में, बातचीत में, दान में, आत्मा में, विश्वास में, पवित्रता में विश्वासियों का आदर्श बन। 1 तीमुथियुस 4:12

जवानी की अभिलाषाओं से भी भागो; परन्तु जो शुद्ध मन से प्रभु को पुकारते हैं, उनके साथ धर्म, विश्वास, दान, मेल मिलाप का पालन करो। 2 तीमुथियुस 2:22

बुद्धि एक सिरे से दूसरे सिरे तक बड़ी शक्ति से पहुँचती है, और सब वस्तुओं को मधुरता से व्यवस्थित करती है। मैं उससे प्यार करता था और बचपन से ही उसकी तलाश करता था, मैं उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था और मैं उसकी सुंदरता का प्रेमी था। सुलैमान की बुद्धि 8:1-2

हे मेरे पुत्र, तू बचपन से शिक्षा ग्रहण कर, इस प्रकार तू बुढ़ापे तक बुद्धि प्राप्त करता रहेगा। सभोपदेशक 6:18

अपने बच्चे को सहलाओ, और वह तुम्हें डरा देगा; उसके साथ खेलो, और वह तुम्हें भारी कर देगा। उसके साथ मत हंसो, ऐसा न हो कि तुम्हें उससे दुःख हो, और अन्त में तुम अपने दाँत पीसो। उसे उसकी युवावस्था में कोई स्वतंत्रता न दें, और उसकी मूर्खताओं पर आंख न झपकाए। जब वह जवान हो, तब उसकी गर्दन झुका देना, और जब वह बालक हो, तब उसे पटकना, ऐसा न हो कि वह हठ करे, और तेरी आज्ञा न माने, और तेरे मन को दुःख पहुंचाए।

सभोपदेशक 30:9-12